चाँद और कवि

रामधारी सिंह दिनकर

रामधारी सिंह दिनकर जी का जीवन-वृत्त:

रामधारी सिंह दिनकर जी का जन्म 1908 को बिहार में हुआ। उर्वशी, रेणुका, हुँकार, इतिहास के आँसु, नील कुसुम आदि आपकी प्रमुख रचनाएँ हैं। आप साहित्य तथा संस्कृति के गंभीर अध्येता तथा व्याख्याकार थे। आपकी रचनाओं में प्रणय की राग हैं। उनकी भाषा में ओज, शक्ति, पौरुष, मस्ती और उमंग हैं। आपको 'उर्वशी' केलिए 1972 का ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला था। आपकी मृत्यु 1974 को हुआ।

कवितांश पढें और प्रश्नों का उत्तर लिखें:

(1) **रात यों कहने .....सही करते।**

(1) समानार्थी शब्द कविता से चुनकर लिखें।

आकाश	- गगन	चंद्र	- चाँद
इस प्रकार	- यों	चंद्रमा	- चाँदनी
विचित्र	- अनोखा	जनम-मरण	- जन्म और मत्यु
मुश्किल	- उलझन	चिंतित	- बेचैन

(2) यह किसकी रचना है?
रामधारी सिंह दिनकर की।

(3) चाँद किसका उपहास करता है?
कवि का।

(4) यहाँ किन-किन के बीच बातचीत होती हैं?
चाँद और कवि के बीच बातचीत होती है।

(5) चाँद की राय में मनुष्य किस तरह का जीव है?
चाँद की राय में मनुष्य विचित्र जीव है।

(6) रात में चाँद कवि से क्या कहने लगा?
रात की खामोशी में आस्मान की ओर आँखें गडा कर चाँद का असीम सौंदर्य देखते समय चाँद कवि से कहने लगा कि मनुष्य विचित्र है। वह समस्याएँ और उलझनों के जाल बुनाकर स्वयं उसमें फँसकर बेचैन होते है । इसलिए नींद और जागृति उनसे दूर हो जाते हैं ।

(7) 'आदमी भी क्या अनोखा जीव होता है' चाँद ने ऐसा क्यों कहा?
आदमी समस्याएँ और उलझनों के जाल बुनाकर स्वयं उसमें फँसकर बेचैन होते है । इससे नींद और जागृति उनसे दूर हो जाते हैं । इसलिए चाँद मनुष्य को विचित्र मैंना।

DO NOT COPY

(8) मनुष्य कब निद्रा और जागृति से वंचित होती है?

समस्याएँ और उलझनों के जाल बुनाकर स्वयं उसमें फँसकर बेचैन होने से मनुष्य निद्रा और जागृति से वंचित होते है।

(9) 'मैं कितना पुराना हुँ' यह किसने कहा? क्यों?

चाँद ने ऐसा कहा। चाँद ने आदि मानव मनु का जन्म और मृत्यु को देखा है। अतः चाँद उतना पुराना है।

(10) **' जानता है तू कि मैं कितना पुराना हूँ?' पंक्ति में सूचित 'तू' और ' मैं' कौन-कौन हैं?**

'तू' मनुष्य को और ' मैं' चाँद को सूचित करते हैं।

(11) मनु के जन्म और मृत्यु के अतिरिक्त चाँद ने क्या देखा?

मनु के जन्म और मृत्यु के अतिरिक्त रात की निरीवता में चाँदनी में अकेले बैठकर अपने सपनों में फँसकर पागलों जैसे मनुष्यों को अनेक बार चाँद ने देखा।

(12) चाँद मनुष्य को क्यों पागल कहा गया है?

मनुष्य चाँदनी में बैठकर सपनों पर सही करते रहने के कारण चाँद मनुष्य को पागल कहते है।

(13) **' उलझनें अपनी बनाकर आप ही फँसता।' पंक्तियों का विश्लेषण करके टिप्पणी लिखें।**

रात की खामोशी में गगन पर आँखें गडाकर बैठते समय कवि को ऐसा लगा कि मनुष्य की विचित्र **आदत देख कर चाँद भी आश्चर्य में पड़ जाता है। वह समस्याएँ और उलझनों के जाल बुनाकर स्वयं उसमें फँसकर बेचैन होते है। उस बेचैनी में नींद और जागृति भी उनसे दूर हो जाते है। चाँद की दृष्टि में मानव पागल का-सा जीवन बिता रहा है।**

(14) कवितांश की आस्वादन टिप्पणी लिखें।

हिंदी काव्य जगत् के विख्यात कवि श्री रामधारी सिंह दिनकर की नीलकुसुम काव्य संग्रह से उद्धृत कविता है, चाँद और कवि। चाँद और कवि के बीच के कल्पित वार्तालाप के रूप में लिखित इस कविता में दिनकर कहते हैं कि कवि-कलाकारों के सपनें ही यथार्थ का रूप धारण करते हैं और उन सपनों की नींव पर समाज का भविष्य खड़ा करने की क्षमता भी है।

रात की खामोशी में आस्मान की ओर आँखें गडा कर चाँद का असीम सौंदर्य देखते समय कवि को ऐसा महसूस हुआ कि चाँद उनसे कुछ कहना चाहता हैं चाँद कवि से कहते है - मनुष्य विचित्र है । वह समस्याएँ और उलझनों के जाल बुनाकर स्वयं उसमें फँसकर बेचैन होते है। इसलिए नींद और जागृति उनसे दूर हो जाते हैं।

चाँद आगे पूछते हैं, जानते हो तुम, मैं कितना पुराना हुँ? मैं ने आदि मानव मनु का जन्म और मृत्यु, देख चुका हुँ । तुम जैसे अनेक पागलों को कई बार देखा है। वे चाँदनी में बैठकर सपनों पर सही करते थे। अर्थात चाँद के अनुसार कवि लोग सपनों को ही प्रधानता देते है, सच्चाई को नहीं।

DO NOT COPY

(2) आदमी का..... पहचानता है तू।

(1) समानार्थी शब्द कविता से चुनकर लिखें।

सस्वर गीत	- रागिनी	बुदबुद	- बुलबुला
पानी	- जल	अग्नि	- आग

(2) आदमी का स्वप्न किसके समान है?

पानी के बुलबुलों के समान है।

(3) पानी के बुलबुलों की विशेषता क्या है?

पानी के बुलबुला क्षणिक है। जल्दी बनते है और जल्दी ही फूटते भी है।

(4) 'आदमी का स्वप्न है? यह बुलबुला पानी का' ऐसा क्यों कहते है?

मनुष्य का स्वप्न भी पानी के बुलबुले की तरह क्षणिक है। जल्दी बनत-टूटते है। फिर भी वह स्वप्न देखता रहता है।

(5) पानी के बुलबुले और मनुष्य के स्वप्न में क्या साम्यता है

पानी के बुलबुले और मनुष्य के स्वप्न दोनों क्षणिक और व्यर्थ है। वे दोनों जल्दी ही बनते है और टूटते भी।

(6) आदमी का स्वप्न पानी जल का बुलबुला है - अपना मत प्रकट करें।

व्यंग्यभरी स्वर में चाँद कहते हैं कि मनुष्य स्वप्न लोक में रहनेवाला पागल मात्र है। ये स्वप्न क्षणिक है। ये आज बनाकर कल फूटनेवाले बुलबुले की तरह हैं। लेकिन इन स्वप्नों में परिवर्तन की आग और नए युग की सृष्टि का बीज है। कवि नए युग-स्रष्टा है। कवि के स्वप्नों और कल्पनाओं में में विद्रोह का आग और नए सृष्टि की प्रेरणा है।

(7) चाँद की राय में मनुष्य कैसे कविता बनाते हैं?

मनुष्य बुलबुलों से खेलकर कविता बनाते हैं।

(8) कवि की रागिनी कौन है?

कवि की रागिनी उसकी कविता ही है।

(9) कवि के बदले रागिनी क्यों बोल उठी?

अपने को स्वप्न जीवी और अपने स्वप्नों को केवल, पानी के बुलबुले मानना कवि को स्वीकार नहीं था। ऐसे व्यंग्य भरी बातें सुनकर कवि चुप बैठा, तो उसकी कविता रूपी भावना उनको बचाने केलिए बोल रही।

DO NOT COPY

(10) 'मुझको जानता है तू?'– ऐसा कौन किससे पूछता है?

कवि की रागिनी चाँद से पूछता है।

(11) कवि की रागिनी ने क्या कहा?

चाँद के व्यंग्य भरे शब्दों के बदले कवि की रागिनी बोल उठी - हे चाँद, तुम गलत समझती हो। तुम मेरी ओर फिर से देखो और मुझे ठीक तरह पहचानने की कोशिश करो। क्या तुम सोचते हो कि मेरी कविता में जो स्वप्न और कल्पनाएँ हैं, वे केवल बुलबुले या केवल पानी मात्र है? इन स्वप्नों में आग है। विद्रोह की आग। उसे तुम क्यों नहीं पहचानते हो?

(12) 'आग को भी क्या नहीं पहचानता है तू' - मतलब क्या है?

कवि की स्वप्नों और कल्पनाओं, अर्थात कविताओं में विद्रोह की आग है, नई सृष्टि का बीज है। अर्थात कवि लोग केवल स्वप्न जीवी नहीं है, एक उज्ज्वल भविष्य के स्रष्टा भी है।

(13) कवितांश की आस्वादन टिप्पणी लिखें।

हिंदी काव्य जगत् के विख्यात कवि श्री रामधारी सिंह दिनकर की नीलकुसुम काव्य संग्रह से उद्धृत कविता है, चाँद और कवि। चाँद और कवि के बीच के कल्पित वार्तालाप के रूप में लिखित इस कविता में दिनकर कहते हैं कि कवि-कलाकारों के सपनें ही यथार्थ का रूप धारण करते हैं और उन सपनों की नींव पर समाज का भविष्य खड़ा करने की क्षमता भी है।

व्यंग्यभरी स्वर में चाँद कहते हैं, आदमी सदा सपनें देखते रहते है। लेकिन ये सपनें, पानी के बुलबुलों की तरह जल्दी ही बनते-टूटते हैं। अर्थात ये क्षणिक एवं व्यर्थ है। बुलबुलों से खेलकर कविता लिखनेवाले मानव पर चाँद उपहास करता है।

चाँद की व्यंग्यभरी वाणी सुनकर कवि चुप रहते हैं। अपने को पानी के बुलबुले मानना, उन्हें स्वीकार नहीं। कवि की कवित्व भावना या रागिणी ऐसे बोल उठी, क्या बताते रहते हो तुम? मुझे पहचान नहीं सकता, तू। मेरे सपने बुलबुल नहीं, कविता में जो कल्पनाएँ हैं, उनमें विद्रोह की आग है। साथ ही उनमें नई शक्ति का बीज भी है। कवि केवल स्वप्न जीवी मात्र नहीं, उसे भविष्य का स्रष्टा मानना चाहिए।

(3) मैं न वह.....तलवार होती है।

(1) समानार्थी शब्द कविता से चुनकर लिखें।

अग्नि	- आग	जिह्वा	- जीभ
सुढ़ृढ	- फ़ौलादी	**तपाना**	**- गलाना**
खड्ग	- तलवार	तेज़	- धार

(2) कवि सपनों को जलाकर क्या बनता है?

कवि सपनों को आग में जलाकर लोहा बनता है।

(3) 'आग में उसको गलाकर लोहा बनाती हुँ'– किसको? क्यों?

सपनों को आग में जलाकर लोहा बनाती है। स्वप्नों की सफलता केलिए बाधाओं को पार करके आगे बढ़ाना है। सफलता प्राप्ति केलिए निरंतर परिश्रम अनिवार्य है। नई सृष्टि की नींव स्वप्नों की सफलता पर है।

(4) कवि की सपनों पर किसकी नींव खड़ा करने की क्षमता है?

कवि की सपनों पर नए युग की नींव खडा करने की क्षमता है।

(5) नए घर की दीवार को क्यों फ़ौलादी कहा गया है?

नव युग की कल्पना मात्र नहीं, कल्पना के सहारे नए युग का सुढ़ृढ नींव डालकर, उसे साक्षात्कार करने की अद्‌भुत शक्ति ओजस्वी कविताओं में है।

(6) चाँद के सामने अब कौन खडा है?

चाँद के सामने अब मनु के पुत्र अर्थात आधुनिक मानव खडा है।

(7) मनु पुत्र की कल्पना कैसी है?

मनु-पुत्र की कल्पना में विद्रोह की असीम शक्ति है, धारवाली है। उसमें समाज का भविष्य खडा करने की क्षमता भी है।

(8) **मनु-पुत्र की कल्पना की अभिव्यक्ति में क्या होती है?**

मनु-पुत्र की कल्पना की अभिव्यक्ति में धार होती है

(9) मनु-पुत्र के हाथ में बाण और तलवार के रूप में क्या-क्या होती है?

विचारों और स्वप्न होती है।

(10) कवितांश की आस्वादन टिप्पणी लिखें।

हिंदी काव्य जगत् के विख्यात कवि श्री रामधारी सिंह दिनकर की नीलकुसुम काव्य संग्रह से उद्धृत कविता है, चाँद और कवि। चाँद और कवि के बीच के कल्पित वार्तालाप के रूप में लिखित इस कविता में दिनकर कहते हैं कि कवि-कलाकारों के सपनें ही यथार्थ का रूप धारण करते हैं और उन सपनों की नींव पर समाज का भविष्य खड़ा करने की क्षमता भी है।

अपने को पागल और सपनों को पानी के बुलबुले मानना कवि को स्वीकार नहीं। आगे कवि की रागिणी फिर बोल उठी - मैं केवल सपनों को स्वीकार करने वाला नहीं हुँ, बल्कि उसे आग में गलाकर लोहा बनाते है। उसमें नए परिवर्तनशील समाज की नींव और दीवार खडा करने की क्षमता भी है। अर्थात नए युग-निर्मिति की नींव डालने की शक्ति ओजस्वी कविताओं में हैं। अर्थात नए युग की कल्पना करके, उसे साक्षात्कार करने की शक्ति कवि की रागिणी में हैं।

DO NOT COPY

कवि की रागिणी कहते है - हे चाँद, अब तुम्हारे सामने मनु नहीं, खडा है। मनु-पुत्र, मानव में शक्तिशाली है। उसकी कल्पना, परिवर्तनशील और तेज़ धारवाली है। विचारों के हाथ में ही नहीं, सपनों के हाथ में भी तीक्ष्ण तलवार रहती है। अर्थात नए मानव में विद्रोह की शक्ति और विचारों में बाणों की तीक्ष्णता है।

(4) **स्वर्ग के सम्राट..... आ रहें ये।**

(1) स्वर्ग के सम्राट आज कौन है?

ईश्वर।

(2) स्वर्ग के सम्राट को क्या खबर देना है?

मनुष्य में आज आकाश की ओर बढ़ने की शक्ति एवं क्षमता हैं। सपनेवाले मनुष्य एक दिन स्वर्ग को भी जीत लेगे।

(3) मानव को रोकने को क्यों कहा है?

मानव एक दि स्वर्ग को भी जीत लेगा।

(4) कवितांश की आस्वादन टिप्पणी लिखें।

हिंदी काव्य जगत् के विख्यात कवि श्री रामधारी सिंह दिनकर की नीलकुसुम काव्य संग्रह से उद्धृत कविता है, चाँद और कवि। चाँद और कवि के बीच के कल्पित वार्तालाप के रूप में लिखित इस कविता में दिनकर कहते हैं कि कवि-कलाकारों के सपनें ही यथार्थ का रूप धारण करते हैं और उन सपनों की नींव पर समाज का भविष्य खड़ा करने की क्षमता भी है।

रात में आस्मान की ओर देखते वक्त कवि को ऐसा लगता है कि चाँद उनसे कुछ कहना चाहता है। चाँद उपहाल करते हैं। चाँद की व्यंग्यभरी वाणी सुनकर कवि चुप रहते है। कवि की रागिणी आगे कहते है।

कवि की रागिणी कहते हैं हे चाँद, तुम स्वर्ग के सम्राट को खबर दें, मनुष्य में आज आकाश की ओर बढने की शक्ति एवं क्षमता है। सपने वाले मनुष्य एक दिन स्वर्ग को भी जीत लेगे। अर्थात भौतिक जगत् की बाधाओं को पारकर आगे बढने का साहस कवि कल्पना से मानव को प्राप्त है।

(5) चाँद और कवि कविता की आस्वादन टिप्पणी लिखें।

श्री रामधारी सिंह दिनकर हिंदी के राष्ट्रकवि हैं । प्रगति के नई राहें ढूँढनेवाला कवि दिनकर जी की नीलकुसुम कविता संग्रह की एक कविता है चाँद और कवि । कवि कलाकारों को स्वप्नदर्शी कहकर यथार्थ की दुनिया से दूर रखते हैं । लेकिन दिनकर की राय में कवि के सपनें कठोर यथार्थ से ज़्यादा दृढ है । इनके सपनें यथार्थ है और इन्हीं के नींव पर समाज का भविष्य खडा जाता हैं। अच्छे स्वप्न और अभिलाषाओं से आगे बढने की प्रेरणा मिलती है और जीवन में उन्नति प्राप्त कर सकते है।

रात की खामोशी में आस्मान की ओर आँखें गडा कर चाँद का असीम सौंदर्य देखते समय कवि को ऐसा महसूस हुआ कि चाँद उनसे कुछ कहना चाहता हैं । चाँद कवि से कहते है - मनुष्य विचित्र है । वह समस्याएँ और उलझनों के जाल बुनाकर स्वयं उसमें फँसकर बेचैन होते है । इसलिए नींद और जागृति उनसे दूर हो जाते हैं।

चाँद पूछते हैं, जानते हो तुम, मैं कितना पुराना हुँ? आदि मानव मनु का जन्म और मृत्यु, देख चुका हुँ । तुम जैसे अनेक पागलों को कई बार देखा है। वे चाँदनी में बैठकर सपनों पर सही करते थे। अर्थात चाँद के अनुसार कवि लोग सपनों को ही प्रधानता देते है, सच्चाई को नहीं।

व्यंग्यभरी स्वर में चाँद कहते हैं, आदमी सदा सपनें देखते रहते है। लेकिन ये सपनें, पानी के बुलबुलों की तरह जल्दी ही बनते-टूटते हैं। अर्थात ये क्षणिक एवं व्यर्थ है। बुलबुलों से खेलकर कविता लिखनेवाले मानव पर चाँद उपहास करता है।

चाँद की व्यंग्यभरी वाणी सुनकर कवि चुप रहते हैं। अपने को पानी के बुलबुले मानना, उन्हें स्वीकार नहीं। कवि की कवित्व भावना या रागिणी ऐसे बोल उठी, क्या बताते रहते हो तुम? मुझे पहचान नहीं सकता, तू। मेरे सपने बुलबुल नहीं, कविता में जो कल्पनाएँ हैं, उनमें विद्रोह की आग है। साथ ही उनमें नई शक्ति का बीज भी है। कवि केवल स्वप्न जीवी मात्र नहीं, उसे भविष्य का स्रष्टा मानना चाहिए।

अपने सपनों को पानी के बुलबुले मानना कवि को स्वीकार नहीं। आगे कवि की रागिणी फिर बोल उठी - मैं केवल सपनों को स्वीकार करनेवाला नहीं हुँ, बल्कि उसे आग में गलाकर लोहा बनाते है। उसमें नए परिवर्तनशील समाज की नींव और दीवार खडा करने की क्षमता भी है। अर्थात नए युग-निर्मिति की नींव डालने की शक्ति ओजस्वी कविताओं में हैं। अर्थात नए युग की कल्पना करके, उसे साक्षात्कार करने की शक्ति कवि की रागिणी में हैं।

कवि की रागिणी कहते है - हे चाँद, अब तुम्हारे सामने मनु नहीं, खडा है। मनु-पुत्र, मानव में शक्तिशाली है। उसकी कल्पना, परिवर्तनशील और तेज़ धारवाली है। विचारों के हाथ में ही नहीं, सपनों के हाथ में भी तीक्ष्ण तलवार रहती है। अर्थात नए मानव में विद्रोह की शक्ति और विचारों में बाणों की तीक्ष्णता है।

कवि की रागिणी आगे कहते हैं - हे चाँद, तुम स्वर्ग के सम्राट को खबर दें, मनुष्य में आज आकाश की ओर बढने की शक्ति एवं क्षमता है। सपने वाले मनुष्य एक-न-एक दिन स्वर्ग को भी जीत लेगे। अर्थात भौतिक जगत् की बाधाओं को पारकर आगे बढने का साहस कवि कल्पना से मानव को प्राप्त है।

(1) "आदमी भी क्या अनोखा जीव होता है," चाँद क्यों ऐसा कह रहा है?

चाँद के मत में मनुष्य विचित्र जीव हैं। वह स्वयं समस्याओं और उलझनों की जाल बुनाता है और उसमें फँसकर बेचैन होते हैं। नींद और जागृति उनसे दूर हो जाते है। वास्तव में यह हालत दयनीय है।

(2) आदमी का स्वप्न जल का बुलबुला है - अपना मत प्रकट करें।

व्यंग्यभरी स्वर में चाँद कहते हैं कि मनुष्य स्वप्न लोक में रहनेवाला पागल मात्र है। ये स्वप्न क्षणिक है। ये आज बनाकर कल फूटनेवाले बुलबुले की तरह हैं। लेकिन इन स्वप्नों में परिवर्तन की आग और नए युग की सृष्टि का बीज है। कवि नए युग-स्रष्टा है। कवि के स्वप्नों और कल्पनाओं में में विद्रोह का आग और नए सृष्टि की प्रेरणा है।

(3) कवि के बदले रागिनी क्यों बोल उठी?

अपने को स्वप्न जीवी और अपने स्वप्नों को केवल, पानी के बुलबुले मानना कवि को स्वीकार नहीं था। इसलिए कवि चुप बैठा, तो उसकी कविता रूपी भावना उनको बचाने केलिए बोल रही।

(4) मनु-पुत्र की कल्पना कैसी है ?

मनु-पुत्र, मानव में शक्तिशाली है। उसकी कल्पना, परिवर्तनशील और तेज़ धारवाली है। उनके विचारों के हाथ में ही नहीं, सपनों के हाथ में भी तीक्ष्ण तलवार होती है। अर्थात आधुनिक मानव में विद्रोह की शक्ति और उनके विचार बाण की तरह तीक्ष्ण है।

(5) स्वर्ग का सम्राट कौन हो सकता है?

स्वर्ग के सम्राट ईश्वर है। लेकिन आज के मानव में आकाश की ओर बढ़ने की शक्ति और क्षमता है। एक दिन वह स्वर्ग को भी जीत सकते है। भौतिक जगत् की बाधाओं को पार करके आगे बढ़कर कठिन प्रयत्न और उत्साह से एक दिन मनुष्य स्वर्ग का सम्राट हो सकते है।

(6) विश्लेषणात्मक टिप्पणी लिखें।

मनु नहीं - - - - - - - - - - - - - -
- - - - - - - - तलवार होती है।

राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर की चाँद और कवि नामक कविता का अंश है, प्रस्तुत पंक्तियाँ। चाँद और कवि के बीच के वार्तालाप के रूप में प्रस्तुत इस कविता में कवि भावना या कवि की रागिणी आगे की जवाब देती है।
चाँद की राय में मनुष्य केवल स्वप्न जीव है। इनके स्वप्न पानी के बुलबुले की तरह क्षणिक है। बुलबुलों से खेलकर कविता लिखनेवाले मानव पर चाँद उपहास करता है। ऐसा उपहास सुनकर, कवि की रागिणी बताती है - हे चाँद, आज तुम्हारे सामने मनु नहीं, मनु-पुत्र खडा है। मनु पुत्र आधुनिक शक्तिशाली मानव है। उनकी कल्पना भी परिवर्तनशील और तेज़ धारवाली है। अर्थात कवि की भावना में एक नए युग निर्मिति की शक्ति है। कवि की भाषा में विद्रोह की भावना और युग को बदलने की शक्ति है। उनके स्वप्न रूपी तलवार भी तीक्ष्ण है। अर्थात विचारों और सपनों से समाज में परिवर्तन अवश्य ला सकते है। इससे दुनिया में ही नहीं, स्वर्ग में भी परिवर्तन लाने की शक्ति एवं क्षमता है।

(7) निम्नांकित कथन पर अपना विचार प्रस्तुत करें।
“महान सपने देखनेवाले के महान सपने हमेशा पूरे होते है।”
डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

आदमी और सपनों का अनूठा संबंध होता है। हर व्यक्ति में किसी न किसी सपने होत है। अपने लक्ष्य या स्वप्न की पूर्ती केलिए वह निरंतर परिश्रम भी करता है। निरंतर परिश्रम करने से सफलता ज़रूर मिलेगा। डॉ.ए.पी.जे, अब्दुल कलाम के ये शब्द सार्थक है-“महान सपने देखनेवाले के महान सपने हमेशा पूरे होते है।” हमारे

सामने इसकेलिए एक ज्वलंत उदाहरण है, भारत की आज़ादी। आज़ादी हमारे राष्ट्रपिता गाँधीजी का सपना था। उसकी पूर्ति केलिए उन्होंने 'अंहिंसा' के हथियार लेकर अंग्रेज़ों का सामना किया। यदि गाँधीजी अपने देश की आज़ादी के सपने नहीं देखे तो ज़रूर हम अब भी अंग्रेज़ों के गुलाम रहेगा।

हम छात्र भी अच्छे-अच्छे सपने देखना है। हमारे सपने व्यक्ति, परिवार, समाज और देश केलिए हितकारी हों तो हमारा जीवन सार्थक और धन्य होगा। ऐसे सार्थक क्षणों में हम उन्नति के शिखर तक पहुँचेगा। पूरी लगन के साथ अपने सपने की पूर्ति केलिए अटल रहें तो हमारा सपना ज़रूर पूरा होगा।

<u>परीक्षा केंद्रित कुछ प्रश्न</u>:

(1) कवि और कवि की रागिनी के बीच के वार्तालाप कल्पना करके लिखें।

रागिनी :आप क्यों इतनी उदासीन हैं?
कवि :चाँद ने मुझे उपहास किया।
रागिनी :उपहास किया? क्या कहकर?
कवि :चाँद कहते है कि हम लोग पागल है।
रागिनी :पागल! कैसे?
कवि :हम तो उलझनों की जाल में फँसकर बेचैन हो रहते है।
रागिनी :फिर!
कवि :हमारे सपने पानी के बुलबुले जैसे हैं।
रागिनी :पानी के बुलबुले! कैसे?
कवि :बुलबुले जैसे क्षणिक!
रागिनी :आपने क्या कहा!
कवि :क्या कहना है?
रागिनी :खबरो मत।आप ज़रा चुप बैठिए। सबका उत्तर मैं दूँगा।
कवि :धन्यवाद।

<u>परीक्षा केंद्रित कुछ और प्रश्न। इनके उत्तर स्वयं लिखने का प्रयास करें</u>:-

(1) चाँद और कवि के बीच का वार्तालाप कल्पना करके लिखें।
(2) चाँद के उपहास में दुःखी होकर कवि अपनी डायरी लिखता है। कवि की डायरी का वह पन्ना कल्पना करके लिखें।
(3) चाँद का उपहास के बारे में कवि अपने मित्र से कहते है। उन दोनों के बीच का वार्तालाप कल्पना करके लिखें।
(4) "मैं न बोला, किंतु मेरी रागिणी बोली", कवि की रागिणी और चाँद के बीच के वार्तालाप
(5) कल्पना करके लिखें।
(6) सालों बाद कवि अपने आत्मकथा लिखते है। उसमें चाँद के उपहास का जिक्र भी होती है। आत्मकथांश तैयार करें।